श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❁ छोटा कयामतनामा ❁

मोमिन दुनीका बेवरा

जो नूर पार अर्स अजीम, ए जो बेवरा कयामत का।
मोमिन दुनी की तफावत, ए फना ओ बीच बका।। १ ।।

अक्षर के पार परमधाम है और कयामत के विवरण दोनों बातों की जानकारी मोमिनों को है। मोमिन अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं और दुनियां वाले मिटने वाले संसार के हैं। इन दोनों में यही फर्क है।

जब लाहूत से रूहें उतरीं, कह्या अलस्तो बे रब कुंम।
नासूत जिमीमें जाए के, जिन मुझे भूलो तुम।। २ ।।

जब परमधाम से रूहें खेल में उतरीं तो श्री राजजी महाराज ने रूहों से कहा "अलस्तो बे रबकुंम" मैं ही एक तुम्हारा खाविंद हूं। मृत्युलोक के खेल में जाकर तुम मुझे भूल मत जाना।

तब रूहों वले कह्या, हम भूलें नहीं क्योंए कर।
तुम साहेद किए रूहें फरिस्ते, पल रेहे न सकें तुम बिगर।। ३ ।।

तब रूहों ने "वले" कहकर जवाब दिया, अर्थात् निश्चित ही आप हो हमारे खाविंद हैं। हम किसी तरह से भी आपको भूलेंगे नहीं। आपने हम रूहों के लिए असराफील फरिश्ते को गवाह बनाया है। हम आपके बिना एक पल भी नहीं रह सकते।

तुम खावंद हमारे सिर पर, अर्स अजीम बका वतन।
हम क्यों भूलें सुख कायम, तुमारे कदमों हमारे तन।। ४ ।।

आप हमारे धनी हैं, हमारे रक्षक हैं, अखण्ड परमधाम हमारा घर है। हम अखण्ड सुखों को कैसे भूल जाएंगे, जबकि हमारी परआतम आपके चरणों तले बैठी है।

हकें कौल किया भेजों मासूक, तिन के साथ फुरमान।
भेज इलम लेऊं जगाए, देसी रूह अल्ला सब पेहेचान।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ने वायदा किया कि मैं अपने माशूक श्यामा महारानी को भेजूंगा और उनके साथ जागृत बुद्धि का ज्ञान भेजकर तुम्हें जगा लूंगा। श्यामा महारानी तुम्हें सब पहचान कराएंगे।

हाथ रसूल के फुरमान, रूह अल्ला साथ इलम।
हादी करावें हजूर बंदगी, खोले पट हक के हुकम।। ६ ।।

रसूल साहब के हाथ कुरान और श्यामा महारानी के हाथ जागृत बुद्धि का ज्ञान भेजूंगा। श्यामा महारानी श्री राजजी के हुकम से सब परदे हटाकर मेरा दर्शन कराएंगी।

Nijanand App

तीनों सूरत महंमद की, तिन जुदी जुदी करी पुकार।
रूहें फरिस्ते लेवें सब साहेदियां, जो लिख भेजी परवरदिगार।।७।।

मुहम्मद की तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी आएंगी और वह अलग-अलग तरीके से ज्ञान देंगी। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को श्री राजजी की लिखी हुई गवाहियां मिल जाएंगी।

बसरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब।
एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब।।८।।

बसरी, मलकी और हकी तीनों के जुदा-जुदा खिताब (उपाधियां) हैं। इनमें से बसरी सूरत कुरान का ज्ञान लाई। मलकी सूरत तारतम ज्ञान की कुंजी लाई। तीसरी हकी सूरत कुरान के छिपे रहस्यों को खोलकर ज्ञान देगी।

लिख भेजी रमूजें इसारतें, दो गिरो तीन सूरत पर।
दूसरा बका की न खोल सके, ए वाहेदत गुझ खबर।।९।।

श्री राजजी महाराज ने यह बातें इशारतों में लिखकर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि के वास्ते बसरी, मलकी और हकी तीन सूरतों के द्वारा भेजी हैं। मूल-मिलावा की गुझ (गुह्य) बातों को इनके बिना दूसरा कोई जाहिर नहीं कर सकेगा।

हजरत आए आया सब कोई, और ले चलेंगे सब।
ए लिखियां जो इसारतें, फुरमाया फिरे न कब।।१०।।

आप हजरत श्री प्राणनाथजी महाराज आ गए। उनके साथ सब शक्तियां आ गईं और वह अब सबको साथ ले चलेंगे। कुरान में जो श्री राजजी महाराज ने लिखकर भेजा था, वह कभी झूठा नहीं हो सकता।

चले लैलत कदर से, तकरार जो अव्वल।
सो भेले दुनीके क्यों चले, जो उमत अर्स असल।।११।।

लैल तुल कदर के पहले तकरार बृज से चले तो अपनी आत्माओं को साथ लेकर रास में गए और बाकी ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया। ब्रह्मसृष्टि अखण्ड है और संसार के जीव नाशवान हैं, इसलिए यह दोनों इकट्ठे नहीं रह सकते।

गिरो बचाई साहेब ने, तले कोहतूर हूद तोफान।
बेर दूजी किस्ती पर, चढ़ाए उबारी सुभान।।१२।।

तूफान-ए-हूद (बृज) में गोवर्धन पर्वत के तले अपने मोमिनों को श्री राजजी महाराज ने स्वयं बचाया। दूसरी बार तूफान-ए-नूह में योगमाया की नाव बनाकर, अर्थात् योगमाया के सहारे अपने मोमिनों को नित्य वृन्दावन में पहुंचाकर बचाया।

अब आई बेर तीसरी, तिनका सुनो विचार।
पेहेचान बिना गिरो क्या करे, या यार या सिरदार।।१३।।

अब तीसरी बार जागनी के ब्रह्माण्ड में आए हैं। इसकी हकीकत सुनो, क्योंकि बिना पहचान के मोमिन हों या ईश्वरीसृष्टि, क्या कर सकते हैं?

Nijanand App

या अर्स आपकी पेहेचान, या हक हादी रूहें निसबत।
गिरो खासी उतरी अर्स से, और दुनी पैदा जुलमत।। १४ ।।

अपनी पहचान या अपने घर की पहचान या श्री राजजी, श्यामाजी और रूहों के मूल सम्बन्ध की पहचान केवल ब्रह्मसृष्टियों को ही है, जो परमधाम से उतरी हैं। बाकी दुनियां सब निराकार से पैदा है।

दिल मोमिन अर्स कह्या, सैतान दुनी दिल पर।
क्यों गिरो दुनी भेली चले, भई तफावत यों कर।। १५ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है और दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस (नारद) की बादशाही है। इससे दुनियां वाले और मोमिन एक साथ नहीं चल सकते। इनके बीच यह ही फर्क है।

ना पेहेचान ना निसबत, दुनी गिरो असल दुस्मन।
एक हक न छोड़ें उमत, दुनी दुनियां बीच वतन।। १६ ।।

दुनियां वालों को न तो अखण्ड की पहचान है और न ही श्री राजजी महाराज से इनका कोई सम्बन्ध है, इसीलिए यह मोमिनों के दुश्मन हैं। मोमिन श्री राजजी महाराज को नहीं छोड़ते। दुनियां वाले दुनियां को नहीं छोड़ते।

निसबत इन तफावत, ए भेले चलें क्यों कर।
दुनी जिमी गिरो आसमानी, दुनी के पांउं गिरो के पर।। १७ ।।

जिनके सम्बन्ध में ही फर्क है वह एक साथ कैसे चल सकते हैं? दुनियां वाले जमीन पर चलते हैं, अर्थात् कर्मकाण्ड से चलते हैं और मोमिन आसमान पर चलते हैं, अर्थात् वह परमधाम का चितवन करते हैं। दुनियां पैरों से चलती है। मोमिन इश्क और ईमान के परों से उड़ते हैं।

एक ईमान दूजा इस्क, ए पर मोमिन बाजू दोए।
पट खोल पोहोंचावे लदुन्नी, इन तीनों में दुनी पे न कोए।। १८ ।।

मोमिनों के दोनों तरफ दो पंख लगे हैं। एक तरफ ईमान और दूसरी तरफ इश्क। इनके पास कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान है जो अज्ञानता के अन्धकार को हटाकर परमधाम पहुंचाता है। इन तीनों इश्क, ईमान और कुलजम सरूप की वाणी में से दुनियां वालों के पास एक भी नहीं है।

ए दुनी चले चाल वजूद की, उमत चले रूह चाल।
लिख्या एता फरक कुरान में, दुनी उमत इन मिसाल।। १९ ।।

दुनियां की चाल (रहनी) शरीर के वास्ते होती है। मोमिन आतम की चाल चलते हैं। दुनियां और मोमिनों के बीच इतना फर्क कुरान में लिखा है।

कह्या दुनियां दिल मजाजी, सो उलंघे ना जुलमत।
दिल अर्स हकीकी मोमिन, ए कहे कुरान तफावत।। २० ।।

दुनियां का दिल मजाजी (झूठा) है जो निराकार से आगे नहीं जाता। मोमिनों का दिल सच्चा है जो परमधाम की बातें सोचते हैं। कुरान में इन दोनों का इतना फर्क बताया है।

Nijanand App

इनमें रूह होए जो अर्स की, सो क्यों रहे दुनीसों मिल।
कौल फैल हाल तीनों जुदे, यामें होए ना चल विचल।। २१ ।।

इनमें जो परमधाम की रूहें होंगी, वे दुनियां के साथ मिलकर कैसे चल सकती हैं? कहनी, करनी और रहनी तीनों ही, दोनों के अलग-अलग हैं, वह बदल नहीं सकते।

जो मोमिन देखें राह दुनी की, सो रूह नहीं अर्स तन
दुनियां घर जुलमत से, मोमिन अर्स वतन।। २२ ।।

जो मोमिन दुनियां के रास्ते पर चलते हैं, वह परमधाम की रूहें नहीं हैं। दुनियां का घर निराकार है और मोमिनों का घर अखण्ड परमधाम है।

पेहेले चल्या सैयद अकेला, तब तो थी सरीयत।
अब अकेले क्यों छोड़िए, गिरो पोहोंची दिन मारफत।। २३ ।।

पहले रसूल साहब अकेले आए थे, इसलिए शरीयत का झण्डा लगाया। अब ब्रह्मसृष्टि आ गई है और कुलजम सरूप (मारफत का ज्ञान) की वाणी की पहचान हो गई है, इसलिए श्री राजजी इनको अकेला नहीं छोड़ेंगे।

पेहेले एक जहूद बुजरक, तिन पीठ न छोड़ी महंमद।
यार असहाब न चल सके, ताकी दे मसनवी साहेद।। २४ ।।

पहले एक गुलाम जैद था जिसने रसूल साहब का साथ नहीं छोड़ा, जबकि उनके यार अबूबक्र, उमर, उस्मान और अली उनके बताए रास्ते पर नहीं चल सके। इसकी गवाही मसनवी किताब में है।

जहूद कहिए क्यों तिन को, जो करे ऐसे फैल।
आगे हुआ सबन के, कदम छोड़ी ना महंमद गैल।। २५ ।।

जो ऐसी रहनी में रहते हैं उनको यहूदी कैसे कहा जाए? यहूदी तो वह गुलाम जैद है, जिसने मुहम्मद साहब के रास्ते को नहीं छोड़ा।

तिन खोली रूह नजर, जाए हकें बखसी बातन।
इन राह सोई चलसी, जो हक अर्स दिल मोमिन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज ने जिसको कुरान के बातूनी रहस्यों को खोलने का अधिकार दिया है, उन श्री प्राणनाथजी ने आत्मा की नजर खोल दी है। अब इनके बताए रास्ते पर वही चलेंगे जिनके दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं।

दिल मजाजी जो कहे, ताको अर्स दिल कबूं न होए।
सो आए न सके वाहेदत में, जिन दिल अबलीस कह्या सोए।। २७ ।।

जिनके दिल मजाजी (झूठे) हैं उनके दिल श्री राजजी महाराज का अर्श कभी नहीं हो सकते और इसलिए यह कभी भी मूल-मिलावा में नहीं आ सकते। दुनियां वालों के दिलों पर अबलीस की बैठक है।

रसूलें राह बताई मेयराज में, अर्स लेसी सोई मोमिन।
देखाई चढ़ उतर, जो हकें खिलवत कहे सुकन।। २८ ।।

रसूल साहब ने मेयराज (दर्शन) की रात्रि में परमधाम में आने-जाने का रास्ता बताया और श्री राजजी महाराज के साथ मूल-मिलावा में हुई बातों को बताया। अब परमधाम को और इन वचनों को जो लेगा, वही मोमिन है।

Nijanand App

मजकूर करी महंमद ने, हक हादी बीच रूहन।
हकें कह्या उतरते रूहों को, सो सब मुसाफ करे रोसन।। २९ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों के बीच जो बातें खेल में उतरते समय हुई थीं, वह सब रसूल साहब ने मेयराज में सुनीं और आकर कुरान में जाहिर कीं।

जो पोहोंच्या इन खिलवतें, दिल हकीकी इन राह।
इत दिल मजाजी आए न सके, जित अबलीस दिलों पातसाह।। ३० ।।

श्री राजजी की खिलवत (मूल-मिलावा) में रसूल साहब ही पहुंचे। यहां के झूठे दिल वाले जिनके दिलों में अबलीस की बादशाही है, वह (परमधाम) नहीं आ सकते।

भूले करे जाहेरियों सिफत, सुध न परी बातन।
मारफत सूरज उगे बिना, क्यों देखें बका अर्स तन।। ३१ ।।

दुनियां में ब्रह्मसृष्टि आकर भूल गई और जाहिरी देवी-देवताओं और गादीपतियों की पूजा करने लगी। उनको जब तक कुलजम सरूप के मारफत का ज्ञान नहीं मिलता, तब तक वह अखण्ड परमधाम में अपनी परआतम को कैसे देख सकते हैं?

तो दें बड़ाई जाहेर परस्तों को, जो समझे नहीं हकीकत।
हक इलम आए बिना, तो क्यों समझे मारफत।। ३२ ।।

इसलिए दुनियां वाले हकीकत के ज्ञान को नहीं समझते और भूलकर अपने आचार्यों की महिमा गाते हैं। जब तक कुलजम सरूप की वाणी नहीं मिल जाती, तब तक मारफत की बातों को कैसे समझ सकते हैं?

सरीयत करे फरज बंदगी, करे जाहेर मजाजी दिल।
बका तरफ न पावे अर्स की, ए फानी बीच अंधेर असल।। ३३ ।।

शरीयत (कर्मकाण्ड) के मानने वाले फर्ज की बन्दगी दिखावे की झूठी बन्दगी करते हैं, इसलिए इनके झूठे दिल मजाजी दिल कहलाते हैं। इनको अखण्ड परमधाम की सुध नहीं है। यह झूठी दुनियां को ही सच्चा समझे बैठे हैं।

दिल हकीकी जो मोमिन, सो लें माएने बातन।
हक इलम इस्क हजूरी, रूहें चलें बका हक दिन।। ३४ ।।

मोमिन जिनके दिल को हकीकी कहा है, वह बातूनी अर्थ लेते हैं। वह सच्चाई के साथ इलम और इश्क लेकर श्री राजजी महाराज की हुजूरी बन्दगी करते हैं। उनकी रहनी अखण्ड घर के लिए होती है।

फेर आए रसूल स्याम मिल, सोई फेर आये यार।
देख निसबत पांचों दुनीमें, क्यों छोड़ें असल अर्स प्यार।। ३५ ।।

अब दूसरी बार हुकम के स्वरूप मुहम्मद साहब और श्री श्यामाजी दोनों मिलकर श्री प्राणनाथजी के अन्दर हैं और वही सखियां भी फिर सुन्दरसाथ के रूप में आई हैं। यह श्री प्राणनाथजी के अन्दर पांचों शक्तियों (धनीजी का जोश, श्यामाजी, आत्म-अक्षर, जागृत बुद्धि और हुकम) के दर्शन करती हैं। यह सुन्दरसाथ अपने श्री प्राणनाथजी को जिनसे अर्श का प्यार है, सम्बन्ध है, उन्हें कैसे छोड़ दें?

Nijanand App

कहे महंमद पेहेले जब मैं चलों, यार आए मिलें खिन माहें।
ए वाहेदत की साहेदी, जाग्या जुदा रेहेवे नाहें।। ३६ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि जब मैं परमधाम चलूंगा, तो एक पल के अन्दर मेरे सुन्दरसाथ आकर मिल जाएंगे, क्योंकि कुलजम सरूप की वाणी से जागृत होकर कोई अलग नहीं रह सकता। यही मोमिनों की पहचान है।

मैं अव्वल जो चलों, साथ आए मिलें सब कोए।
तो सिफत दुनियां मिने, खासी गिरोकी होए।। ३७ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि जब मैं घर चलूंगा तब सब सुन्दरसाथजी आकर मेरे साथ मिल जाएंगे। तब सब ब्रह्मसृष्टियों की प्रशंसा होगी।

इत मैं चलो जो अव्वल, कर यारोंसों सहूर।
तो खूबी होए तेहेकीक, नूर पर नूर सिर नूर।। ३८ ।।

यहां संसार से मैं अपने मोमिनों से विचार करके जब घर चलूंगा, तो निराकार के पार, तिन पार के भी पार, तक खूब महिमा गाई जाएगी।

खूबी खुसाली अधिक, और ज्यादा सोभा संसार।
ले प्याला रूह जगाए के, ल्यो इस्क चलो हादी लार।। ३९ ।।

तब खूब खुशियां मनायी जाएंगी और संसार में मोमिनों की बहुत शोभा होगी। इसलिए हे सुन्दरसाथजी! इश्क का प्याला लो और अपनी आतम को जागृत करके श्री प्राणनाथजी के साथ अपने घर चलो।

पोहोंचे नहीं अंग दिल के, ताथें रूह अंग लीजे जगाए।
तो लों आपा ना मरे, जोलों खुदी न देवे उड़ाए।। ४० ।।

तुम्हारे यहां के मन की चाहनाएं परआतम को नहीं पहुंचती हैं, इसलिए पहले अपनी रूह के अंगों को सावचेत (सावधान) करो। जब तक अपने अन्दर के अहंकार को समाप्त नहीं करोगे, तब तक यह संसार नहीं छूटेगा।

जब उठें अंग रूह के, सो तूं जागी जान।
आई अर्स अंग लज्जत, तिन पूरी भई पेहेचान।। ४१ ।।

जब रूह के अंग जागृत हो जाएंगे तब तुम समझना कि मेरी परआतम जाग गई है और उसे पूरी पहचान हो गई है। तभी तुम्हारी आतम को परआतम के सुख यहां मिलेंगे।

जो अंग होवे अर्स की, उपजत नहीं अंग आहे।
बारे हजार रूहन में, सो काहेको आप गिनाए।। ४२ ।।

जो परमधाम की आतम है और जिसकी परमधाम में परआतम बैठी है, यह पहचान कर जिसको इस वियोग में अंग से ठंडी आहें नहीं निकलतीं वह बारह हजार सुन्दरसाथ में अपने को न समझें।

Nijanand App

करवट लेते सूते नींदमें, नाला मारत जे।
याद बिगर किए अंग आवहीं, स्वाद आसिक मासूक के।।४३।।

और जो सोते समय भी करवट लेने में भी आहनाला (हाय श्री राजजी) की ठण्डी सांसें लेते हैं, इससे याद किए बिना ही आशिक मोमिन के तन में माशूक श्री राजजी महाराज के सुख का स्वाद मिलता है।

जो होए आवे मोमिन रूह से, सो कबूं ना और सों होए।
इत चली जो रूह जगाए के, सो सोभा लेवे ठौर दोए।।४४।।

जो मोमिन अपने धनी के लिए कर सकते हैं, वह दुनियां वाले कभी भी नहीं कर सकते। जिसकी आतम यहां खेल में कुलजम सरूप की वाणी से जागृत हो जाती है, उसे संसार में तथा परमधाम में दोनों जगह मान मिलेगा।

देख बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, सो नहीं वतनी अखण्ड।।४५।।

श्री प्राणनाथजी का वियोग देखकर जो शरीर को जिन्दा रखता है, उनकी अक्ल को धिक्कार है। वह अखण्ड परमधाम के रहने वाले नहीं हैं।

ए जाहेर देखावें दोस्ती, जाए रूह न अंदर पेहेचान।
ए मोमिन रूहें जान हीं, जाको अर्स दिल कह्यो सुभान।।४६।।

जो ऊपर की दृष्टि से दोस्ती का भाव रखते हैं, इनको श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान नहीं है। श्री प्राणनाथजी के स्वरूप को मोमिन ही पहचानते हैं, जिनके दिल में श्री राजजी महाराज अपना अर्श करके बैठे हैं।

रूहें दम बिछोहा न सहें, जो होए बका की असल।
रूह हादी की चलते, अरवा आगूं हीं जाए चल।।४७।।

परमधाम की जो असल ब्रह्मसृष्टि है, वह श्री प्राणनाथजी का वियोग एक पल भी सहन नहीं कर सकती। श्री प्राणनाथजी महाराज के चलने की खबर सुनने से पहले ही अपने तन को छोड़ देगी।

दिल हकीकी रहे ना सकें, जो आया लदुन्नी दरम्यान।
दिल मजाजी क्या करे, हुआ फरक जिमी आसमान।।४८।।

जिनको कुलजम सरूप की वाणी मिल गई है, वह हकीकी दिल वाले मोमिन संसार में नहीं रह सकते। जिनके दिल मजाजी (झूठे) हैं, उनका मोमिनों से जमीन आसमान का अन्तर है।

कोई छोड़े ना अपनी असल, पोहोंचे सिफली का मलकूत।
जबरूती जबरूत में, रूहें लाहूती लाहूत।।४९।।

अपने घर को कोई नहीं छोड़ता। झूठी दुनियां वाले बैकुण्ठ जाते हैं। ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम और ब्रह्मसृष्टि परमधाम में जाती है।

बेवरा लिख्या मुसाफ में, लिखे जुदे जुदे बयान।
दिल मजाजी क्यों समझे, जाको मुरदार कह्या फुरकान।।५०।।

कुरान में यह विवरण स्पष्ट लिखा है, परन्तु अलग-अलग ठिकानों पर। कुरान में जिसको मुरदार कहा है, यह झूठे दिल वाले इस बात को कैसे समझ सकते हैं?

Nijanand App

ए उपले पानी उजूसे, हुआ न कोई पाक।
ए पानी न पोहोंचे दिलको, क्या होए ऊपर धोए खाक।।५१।।

संसार के इस पानी से वुजू करने से, अंग धोने से कोई पाक नहीं हुआ, क्योंकि यह पानी दिल को साफ नहीं करता। झूठे तन को ऊपर के धोने से क्या फायदा?

किताबों सबों यों कह्या, अर्सें पोहोंचे रूह पाक।
दिल मजाजी इन जिमी के, मिल जाए खाक में खाक।।५२।।

सभी धर्मशास्त्रों में कहा है कि जिनकी आतम पाक है, वही परमधाम जाती है। संसार के झूठे तन और दिल वाले यहीं मिट्टी में मिल जाते हैं।

खाक कछू न पावहीं, रूह तो अपने बीच असल।
कोई देखे सहूर करके, तो पोहोंचे हादी कदमो नसल।।५३।।

संसार में जीवों को कुछ नहीं मिलता। यदि विचार करके देखो तो रूहें अपने श्री राजजी महाराज के चरणों में परमधाम पहुंच जाती हैं।

गुम हुई जिनोंकी अकलें, होए नजीक न तिनों हक।
जान बूझ न छोड़े इन जिमी, तिन से रेहेनी न होए बेसक।।५४।।

जिनकी बुद्धि माया में भटकी है श्री राजजी उनके नजदीक नहीं होते। ऐसे लोग जान-बूझकर संसार को नहीं छोड़ते और न ही वह मोमिनों की रहनी में चल सकते हैं।

कदी केहेनी कहे मुख से, बिन रेहेनी न होवे काम।
रेहेनी रूह पोहोंचावहीं, केहेनी लग रहे चाम।।५५।।

यदि कोई मुख से कुछ कह भी देता है तो कहने मात्र से कोई काम नहीं होता। रहनी के बिना आतम जागृत नहीं होती। रहनी ही आतम को परआतम से मिलाती है। कहनी तो केवल जिह्वा तक रहती है।

केहेनी सुननी गई रातमें, आया रेहेनी का दिन।
बिन रेहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेर बका अर्स तन।।५६।।

कहने और सुनने का जमाना अज्ञान का रास्ता था, जो समाप्त हो गया। अब रहनी का दिन आया है। बिना रहनी के कहनी से कुछ लाभ नहीं होता। अखण्ड परमधाम और परआतम की पहचान बिना रहनी के होती नहीं है।

केहेनी करनी चलनी, ए होंए जुदियां तीन।
जुदा क्या जाने दुनी कुफर की, और ए तो इलम आकीन।।५७।।

कहनी, करनी और रहनी तीनों अलग-अलग हैं। इसे यह संसार की झूठी दुनियां कैसे जान सकती है? इसकी पहचान उन्हीं को होगी जिनके पास कुलजम सरूप की वाणी और यकीन है।

अर्स सब जाहेर हुआ, नूर तजल्ला हक।
रूहअल्ला महंमद मेंहेंदीने, उड़ाए दई सब सक।।५८।।

परमधाम की सब हकीकत और श्री राजजी महाराज की पहचान श्री श्यामा महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी से सबके संशय मिटाकर पहचान करा दी है।

Nijanand App

सूर ऊग्या मारफत का, महंमद मेंहेंदी दिल।
नूर अंधेर जुदे हुए, जो रहे थे रातके मिल।।५९।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के इश्क और इलम से भरे गंजान गंज दिल से कुलजम सरूप जागृत बुध के ज्ञान रूपी सूर्य उदय होने से संसार में जो ब्रह्म और माया, जीव और आतम, सत और असत मिले हुए थे, अलग-अलग हो गए (खीर नीर का हुआ निबेरा)।

कुफर और ईमान की, सुध न थी बीच रात।
अब सुध परी सबन को, जाहेर हुई हक जात।।६०।।

अज्ञान के अंधेरे में सत्य और झूठ, कुफ्र और ईमान की पहचान नहीं थी। अब मोमिन संसार में जाहिर हो गए हैं। सबको पहचान हो गई है, जानकारी मिल गई है।

ना सुध मोमिन मुसलिम, ना सुध काफर मुनाफक।
सो सुध हुई सबन को, किया बेवरा इलम हक।।६१।।

दुनियां वालों को अब तक ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि, काफिरों तथा मुनाफिकों (दोगलों की) पहचान नहीं थी। अब कुलजम सरूप की वाणी ने सबकी पहचान करा दी।

हक इलम मारफत की, जाहेर किया नबी दिल नूर।
कुफर काढ़ ईमान दिया, ऊग्या दिल मोमिन असौं सूर।।६२।।

कुलजम सरूप की वाणी ने कुरान के सभी रहस्यों को खोल दिया और मोमिनों के अन्दर से माया की चाहना हटाकर ईमान भर दिया, जिसके द्वारा मोमिनों के दिल से क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के भेद खुलने लगे।

खोली इलमें सब किताबें, या कतेब या वेद।
सब खोले मगज मुसाफ के, माहें छिपे हुते जो भेद।।६३।।

कुलजम सरूप की वाणी ने वेद-कतेब तथा सभी धर्मग्रन्थों के रहस्य खोल दिए और कुरान के छिपे रहस्यों को भी खोल दिया।

जेता कोई पैगंमर, सो सब जहूदों माहें।
इसलाम मोमिन सब याही में, कोई जाहेरियों में नाहें।।६४।।

दुनियां में जितने भी पैगम्बर हुए हैं, सब यहूदियों में हुए हैं। यहां तक कि इस्लाम धर्म के चलाने वाले रसूल साहब और मोमिन यहूदियों में आए हैं। कर्मकाण्ड और शरीयत पर चलने वाले जाहिरी लोगों में नहीं आए हैं।

जाकी करे मुसाफ सिफतें, औलिए अंबिए पैगंमर।
सो हुए सब जहूदों मिनें, जो देखे बातून सहूर कर।।६५।।

कुरान में औलिया, अंबिया और पैगम्बरों की महिमा गाई है जो बातूनी विचार करके देखो, तो यह सब यहूदी थे।

जिने लिए माएने बातून, हुआ पैगंमर सोए।
उमत औलिए अंबिए, बिन बातून न हुआ एक कोए।।६६।।

कुरान के बातूनी अर्थ जिन्होंने लिए, वही पैगम्बर कहलाए। कुरान के बातूनी अर्थ जाने बिना कोई औलिया, अंबिया नहीं बन सकता।

Nijanand App

जाहेरी बड़े जानें आपको, और समझें नहीं हकीकत वतन।
हक इलम आया नहीं, तोलों होए नहीं रोसन।। ६७ ।।

दुनियां के काजी, मौलवी, औलिए अंबिए सब अपने को बड़ा समझते हैं और कुरान के छिपे रहस्यों को जानते नहीं हैं। जब तक कुलजम सरूप की वाणी नहीं आई, तब तक किसी को बातूनी भेद नहीं खुले।

कह्या जाहेर माहें दुनियां, और बातून माहें हक।
ए वेद कतेब पुकारहीं, हक इलम कहे बेसक।। ६८ ।।

दुनियां वाले कुरान के जाहिरी अर्थ लेते हैं, जबकि बातूनी अर्थों में श्री राजजी महाराज की पहचान होती है। ऐसा वेद, कतेब कहते हैं। कुलजम सरूप की वाणी भी यही बतलाती है।

ए नूर जाहेर तो हुआ, जब कुराने खोली हकीकत।
रात मेट के दिन किया, सो दिल महंमद सूर मारफत।। ६९ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के दिल से जब कुलजम स्वरूप की वाणी जाहिर हुई तो कुरान के छिपे रहस्य खुल गए। अज्ञान के अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का उजाला हो गया।

कौल किया हकें रूहों सों, बीच बका वतन।
सो साइत आए मिली, जाहेर हुआ अर्स तन।। ७० ।।

श्री राजजी महाराज ने अखण्ड परमधाम में रूहों से वायदा किया था। वह समय अब आ गया। परमधाम और परआतम की पहचान सबको हो गई।

एक खुदी थी दुनी में, दूजी सुभे सक।
करते फैल तरफ हवा के, पीठ दिए तरफ हक।। ७१ ।।

दुनियां में एक तो अहंकार था दूसरे संशय था, इसलिए श्री राजजी महाराज की तरफ पीठ देकर सबकी रहनी निराकार के वास्ते ही थी।

सो खुदी काढी जड़मूल से, हुए जाहेर हक इलम।
सक सुभे कछू ना रही, हुई सब में एक रसम।। ७२ ।।

अब श्री राजजी महाराज की कुलजम सरूप की वाणी आ गई है, जिसने अहंकार को जड़ से समाप्त कर दिया। किसी तरह का संशय भी नहीं रह गया। अब सभी एक पारब्रह्म के पूजक हो गए हैं।

जुदी जुदी जातें कहावतीं, फैल करते जुदे नाम धर।
सो रात मेट के दिन किया, हुई जाहेर सबों फजर।। ७३ ।।

दुनियां अलग-अलग जातियों में बटी थी और अलग-अलग देवी-देवताओं की पूजक थी। अब कुलजम सरूप की वाणी से सबका अन्धकार मिटकर ज्ञान का सवेरा हो गया।

जिनों खुली नजर रूह की, सोई पोहोंचे अर्स हक।
जिनों छूटी न नजर जाहेरी, सो पड़े दुनी बीच सक।। ७४ ।।

जिनकी आत्मदृष्टि खुल गई, वही श्री राजजी महाराज और परमधाम को पहुंचेंगे। जिनकी दुनियां की जाहिरी दृष्टि नहीं छूटी, वह दुनियां के अन्दर पड़े संशय में ही डूबे रहेंगे।

Nijanand App

जिनों खुली हकीकत मारफत, सो सहे ना बिछोहा खिन।
और हक इलम खोल्या आखिरी, ए बीच असल अर्स तन।।७५।।

जिनको हकीकत और मारफत के ज्ञान (कुलजम सरूप) की पहचान हो गई, वह अपने धनी श्री राजजी का एक पल भी वियोग सहन नहीं कर सकते। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने मोमिनों के बीच कुलजम सरूप की वाणी को खोल दिया है।

जो जाग उठ बैठा हुआ, जगाया हक इलम।
सो हादी बिना पल एक ना रहे, छोड़ न सके कदम।।७६।।

जिसको कुलजम सरूप की वाणी ने जगा दिया है वह जागकर बैठ गया। अब श्री प्राणनाथजी के चरणों को वह एक पल भी नहीं छोड़ेगा।

सब साहेदी दई जो हदीसों, और अल्ला कलाम।
सो साहेदी ले पीछा रहे, तिन सिर रसूल न स्याम।।७७।।

कुरान में और हदीसों में जो गवाहियां दी हैं, उन गवाहियों को लेकर भी जो पीछे रह जाए, तो उसे न प्राणनाथजी की और न श्री राजजी महाराज की मेहर प्राप्त होगी।

जिनों लदुन्नी पोहोंचिया, लिया बका अर्स भेद।
सो क्यों गिरोसों जुदा पड़े, जाए परे कलेजे छेद।।७८।।

जिनको कुलजम सरूप साहेब की वाणी मिल गई और अखण्ड परमधाम के रहस्यों को जान लिया, वह अपनी मोमिनों की जमात से अलग नहीं हो सकते, क्योंकि यह वाणी उनके कलेजे में चुभ गई है।

जाए खुली हकीकत मारफत, पाई अर्स पेहेचान।
सो क्यों सहे बका बिछोहा, जिनों नींद उड़ी निदान।।७९।।

जिनको हकीकत-मारफत के भेद कुलजम सरूप की वाणी से खुल गए हैं, उनको परमधाम की पहचान हो गई। जब उनसे माया छूट गई तो फिर वह परमधाम का वियोग कैसे सहन कर सकते हैं?

ए पोहोंच्या मता सब रूहों को, जब पोहोंचाया इलम हक।
इत सक जरा ना रही, पोहोंच्या हक बका मुतलक।।८०।।

जब कुलजम सरूप की वाणी के द्वारा मोमिनों को परमधाम की सब न्यामतें मिल गईं तो फिर उनके अन्दर जरा भी संशय नहीं रहेंगे और निश्चित ही वह परमधाम पहुंचेंगे।

जाको हक इलम पोहोंचिया, तिन हुआ सब दीदार।
अन्तर कछुए ना रह्या, वह पोहोंच्या नूर के पार।।८१।।

जिनको कुलजम सरूप की वाणी की पहचान हो गई, उन्हें सब कुछ दिखने लगा। वह अक्षर के पार परमधाम पहुंच गए और श्री राजजी महाराज से उनका कुछ अन्तर नहीं रह गया।

जाको हक इलम आया नहीं, ताए पट रह्या अंतराए।
हक नजीक थे सेहेरग से, तहां से दूर ले गए उठाए।।८२।।

जिसको श्री राजजी महाराज के कुलजम सरूप की वाणी नहीं मिली तो उस पर माया का परदा पड़ा ही रहा। श्री राजजी महाराज उनको सेहेरग से नजदीक थे, पर कुलजम सरूप की वाणी पर यकीन न होने से दूर भटक गए।

Nijanand App

रूह ठौर है रूह के, ए जो लेती इत दम।
सो गया असल जुलमतें, जिनों सुध परी ना हक कदम।। ८३ ।।

रूह का ठिकाना मूल-मिलावा परमधाम में है, परन्तु जिन रूहों को संसार में कुलजम सरूप की वाणी नहीं मिली और न श्री राजजी महाराज के स्वरूप की ही पहचान हुई, वह असल रूह होते हुए भी निराकार के अंधेरे में भटक गईं।

लिया लदुन्नी जिनने, सो क्यों सोवे कबर माहें।
जिने मूल सरूप देख्या अपना, उठ जागे सोवे नाहें।। ८४ ।।

जिन्होंने कुलजम सरूप की वाणी को ग्रहण कर लिया, वह संसार के झूठे तनों में कैसे रह सकती हैं? जिन्होंने अपने मूल स्वरूप को परमधाम में देख लिया है, वह उठकर खड़ी हो जाएंगी। माया में सोएंगी नहीं।

वाको तो फजर हुई, हुआ बका सूरज दीदार।
मिल्या कौल अव्वल का, जो किया था परवरदिगार।। ८५ ।।

ऐसी रूहों को ज्ञान का सवेरा हो गया और उन्हें अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज का दर्शन भी प्राप्त हुआ। श्री राजजी महाराज ने खेल में उतरते समय जो वायदे किए थे, वह सभी उन्हें याद आ गए।

जो उठी कयामत को, सो क्यों सोवे ऊगे दिन।
आया असल तन में, बीच बका वतन।। ८६ ।।

जिसको कुलजम सरूप की वाणी से, कयामत के निशान जाहिर हो गए, तो वह सवेरा होने पर अब कैसे सोएगा? वह परमधाम में अपनी परआतम में जाग जाएगा।

जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी माहें।
पांचों पोहोंचे पांचों में, रूह अपनी असल छोड़े नाहें।। ८७ ।।

यदि कोई रूह इस संसार में जागृत होकर अपना तन पहले छोड़ देती है, तो वह आतम अपने जीव को लेकर श्री प्राणनाथजी के चरणों में पन्नाजी पहुंच जाती है, क्योंकि वही चरण ही उसका असल ठिकाना है। पांच तत्व का झूठा शरीर पांच तत्व में मिलकर खत्म हो जाता है।

यों इलम समझावते, जो कोई ना समझत।
तिन मजाजी दिल पर, जिन करो नसीहत।। ८८ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से इस तरह से समझाने पर भी यदि किसी को समझ नहीं आती, तो ऐसे झूठे दिल वाले दुनियां के जीवों को चर्चा मत सुनाओ।

काफर मुसलिम मोमिन, जो ए जुदे न होते तीन।
तो अर्स तन और जिमीके, क्यों पाइए कुफर आकीन।। ८९ ।।

यदि जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि तीनों अलग-अलग न होते तो परमधाम के तनों में तथा दुनियां के तनों में यकीन और कुफ्र के भी भेद का पता कैसे लगता?

Nijanand App

अर्स बका तन मोमिन, दुनियां फना जिमी तन।
ताकी केहेनी रेहेनी क्यों होवे, क्यों होए एक चलन।। ९० ।।

अखण्ड परमधाम में मोमिनों के तन हैं और दुनियां वालों के तन झूठे संसार में है, इसलिए इनकी कहनी, रहनी और चलन एक सी कैसे हो सकती है?

जो हक अर्स दिल मोमिन, मिल के करो सहूर।
कही जिमी तले की दुनियां, रूहें नूर पार तजल्ला नूर।। ९१ ।।

जिन मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है, विचार करके देखो। वह रूहें अक्षर के पार परमधाम में रहने वाली हैं। बाकी सब दुनियां निराकार की है।

मोमिन और दुनी के, चाहिए सब विध जुदागी।
दुनियां पैदा जुलमत से, रूहें उतरी अर्स अजीम की।। ९२ ।।

मोमिनों में और दुनियां वालों में सब तरह से अन्तर होना चाहिए, क्योंकि दुनियां निराकार से पैदा है और मोमिन परमधाम से उतरे हैं।

ए सब बातें याद राखियो, फल बखत आखिरत।
चलते फरक जो ना होवे, तो रूहों की क्यों करे हक सिफत।। ९३ ।।

इन सब बातों को उस समय पर याद रखना जिस समय दुनियां को तुम्हारे हाथ से कायम होने का फल मिलेगा, अर्थात् अखण्ड मुक्ति मिलेगी। यदि अन्त समय का इतना फर्क न होता, तो हक श्री राजजी महाराज रूहों की महिमा क्यों गाते?

मर मर सब कोई जात हैं, चाहिए मोमिनों मौत फरक।
दुनियां बीच गफलत के, मोमिन जागें दिल अर्स हक।। ९४ ।।

संसार में मरते तो सभी हैं, परन्तु मोमिनों के शरीर छोड़ने में भी अन्तर होता है। दुनियां शरीर छोड़कर निराकार में मिल जाती है और मोमिन जागृत होने पर अपने धनी के चरणों में पहुंच जाते हैं।

जो रूह होसी मोमिन, चल्या चाहिए सावचेत।
कह्या काफर स्याह मुंह आखिर, मुख मोमिन नूर सुपेत।। ९५ ।।

जो मोमिन होंगे उनके मुख उज्ज्वल होंगे और जो काफिर होंगे उनके मुंह काले होंगे, इसलिए मोमिनों को संसार में सावधानी से चलना चाहिए।

मेला मजाजी दिलों का, ए चले बांधी जात कतार।
ए अर्स दिल हकीकी जीवते, क्यों चलें भांत मुरदार।। ९६ ।।

यह संसार झूठे दिल वालों का मेला है। सब एक-दूसरे के देखा-देखी कर्म करते हैं। मोमिनों के दिल हकीकी हैं, इसलिए नाचीज दुनियां वालों की तरह नहीं चलेंगे।

बीच फना जीवों के, क्यों रहें बका अर्स तन।
पल इनमें रेहे ना सकें, जिन सिर बका वतन।। ९७ ।।

संसार में नष्ट होने वाले जीवों के बीच में मोमिन जिनके तन परमधाम में हैं, नहीं रह सकते। जिनका घर ही परमधाम है, वह संसार में एक पल के लिए भी कैसे रहें?

Nijanand App

ए जो दुनियां दिल मजाजी, या उनके सिरदार।
ना पोहोंचे फना बका मिने, ए हक कौल परवरदिगार।। ९८ ।।

यह झूठे दिल वाले दुनियां के लोग और इनके सिरदार देवी-देवता अखण्ड को नहीं पहुंच सकते। खुदा ने ऐसे वचन सब ग्रन्थों में कह रखे हैं।

मोमिन उतरे नूर बिलंदसे, ए दुनी पैदा जुलमत।
सांच झूठ क्यों मिल सके, क्यों रास आवे सोहोबत।। ९९ ।।

मोमिन परमधाम से खेल में उतरे हैं। दुनियां निराकार से पैदा है। मोमिन सत्य हैं। दुनियां झूठ है। आपस में यह कैसे मिल सकते हैं?

सांचे सांचा मिल चले, मिले झूठा झूठों माहें।
जो जैसा तैसी सोहोबत, इनमें धोखा नाहें।। १०० ।।

सच्चे से सच्चे मिलते हैं। झूठे से झूठे मिलते हैं। जो जैसे होते हैं उनको वैसी ही संगति मिल जाती है। इसमें जरा भी धोखा नहीं है।

अर्स दिल मोमिन कह्या, दुनी दिल पर अबलीस।
ए सैतान दोस्त न किसी का, जो काट देवे कोई सीस।। १०१ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है। दुनियां के दिल में शैतान बैठा है, जो किसी का दोस्त नहीं है चाहे कोई अपना सिर भी क्यों न काट दे।

लाहूत बका फना नासूत, ए तौल देखो दोए।
चिरकीन जिमीसें निकसके, क्यों न लीजे बका खुसबोए।। १०२ ।।

परमधाम अखण्ड है। चौदह लोक नाशवान हैं। अब इन दोनों को तौलकर देखो तो समझ में आएगा। इस गन्दी जमीन से निकलकर अखण्ड परमधाम का आनन्द क्यों न लिया जाए?

जान बूझके भूलिए, इलम पाए बेसक।
देखो दिल विचार के, क्यों राजी करोगे हक।। १०३ ।।

कुलजम सरूप की संशय रहित वाणी की पहचान हो जाने पर भी यदि भूल करते हैं तो हे रूहो! दिल से विचार करके देखो। परमधाम में श्री राजजी को कैसे रिझाओगे?

जीवते मारिए आपको, सब्द पुकारत हक।
जो जीवते न मरेंगे मोमिन, तो क्या मरेंगे मुनाफक।। १०४ ।।

कुलजम सरूप की वाणी स्पष्ट कह रही है कि यदि मोमिन अपने गुण, इन्द्रियों की चाहना जीते जी समाप्त नहीं करेंगे तो क्या मुनाफिक (दोगले) लोग यह काम करेंगे?

फुरमाए कलाम सब रूहों को, ए मोमिन करें सहूर।
इन अंधेरी से निकस के, क्यों न जैए पार नूर।। १०५ ।।

कुलजम सरूप की वाणी सब रूहों के वास्ते कही है। मोमिन ही इसका विचार करेंगे। वह इस अज्ञानता से भरे अन्धकार वाले संसार से निकलकर परमधाम क्यों नहीं जाएंगे?

Nijanand App

हक हुकम हादी चलावते, क्यों न लीजे अर्स राह।
मूल सरूप ले दिलमें, उड़ाए दीजे अरवाह।। १०६ ।।

श्री राजजी महाराज के आदेश को श्री प्राणनाथजी महाराज चला रहे हैं तो हम इनके बताए अनुसार परमधाम का रास्ता क्यों न लेवें? श्री राजजी महाराज के स्वरूप को दिल में धारण करके इस झूठे तन को उड़ा दो।

चलना सबों सिर हक है, ए जान्या सबों तेहेकीक।
पर आप बस कोई न चल्या, चले एक दूजेकी लीक।। १०७ ।।

सब संसार को पता है कि मालिक परमात्मा के हुकम से ही यहां सबको चलना है। फिर भी अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके परमात्मा के बताए सत्य मार्ग पर कोई नहीं चलता। सब एक-दूसरे की देखा-देखी चलते हैं।

जो कोई इत जागिया, सो क्यों चले परवस।
सब सावचेत सुरत बांधके, बीच उठिए अपने अर्स।। १०८ ।।

जो कुलजम सरूप की वाणी से जाग गया है, वह फिर दूसरे के अधीन होकर नहीं चलेगा। दुनियां की तरफ से सावचेत (सतर्क) होकर अपनी सुरता मूल-मिलावा में बांधकर जागृत हो जाएगा।

जो जागी इत होएसी, तिनका एही निसान।
मूल सरूप ले सुरत में, पट खोलिए कर पेहेचान।। १०९ ।।

जो रूह यहां जाग जाएगी, उसकी यही पहचान होगी कि वह अपनी सुरता में इस मूल स्वरूप श्री राजजी को लेकर संसार छोड़ देगी।

भला कहे दुनियां मिने, न भूलिए अपने तन।
हक हादी रूहें बीच खिलवत, उठिए बीच बका वतन।। ११० ।।

दुनियां वाले तुम्हारी भले कितनी ही प्रशंसा करें, परन्तु उसमें पहुंचकर अपने मूल तन को मत भूलो। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें जहां मूल-मिलावा में बैठी हैं उस अखण्ड परमधाम में जागृत हो जाओ।

जो मसलहत कर चलिए, अर्स रूहें मिल कर।
अपनी जुदाई दुनी से, सो क्यों होए इन बिगर।। १११ ।।

परमधाम की सभी रूहें मिलकर यदि विचार करके एक साथ चलें, तभी इस दुनियां से छुटकारा पाकर घर चलना सम्भव होगा। इसके बिना दुनियां नहीं छूटेगी।

अपनी जुदाई दुनी से, किया चाहिए जहूर।
दोऊ एक राह क्यों चलें, वह अंधेरी एह नूर।। ११२ ।।

परमधाम की रूहों को निश्चित ही जीते जी दुनियां वालों का साथ छोड़ना चाहिए, क्योंकि दुनियां वाले और रूहें दोनों एक साथ नहीं चल सकते। दुनियां वाले झूठी माया निराकार से हैं और रूहें श्री राजजी के नूरी अंग हैं।

महामत कहे सुनो मोमिनों, मेहेर हक की आपन पर।
सब अंगों देखो तुम, तब खुले रूह की नजर।। ११३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे मोमिनो! सुनो, श्री राजजी महाराज की हमारे ऊपर बड़ी मेहर है। तुम अपने अंग-अंग में श्री राजजी महाराज की मेहर को देखो तो तुम्हारी आत्मदृष्टि खुल जाएगी।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ११३ ॥

Nijanand App